अप्रैल 2016

सामान्य ज्ञान दर्पण

इस अंक में...

9 मित्रता के बिना जीवन सारहीन

विशेष स्तम्भ

10 समसामयिक सामान्य ज्ञान
15 आर्थिक परिदृश्य
28 केन्द्रीय बजट 2016-17
32 रेल बजट 2016-17 किराए-भाड़े में कोई वृद्धि नहीं
34 आर्थिक समीक्षा 2015-16 : अर्थव्यवस्था की स्थिति व चुनौतियों का लेखा-जोखा
37 राष्ट्रीय परिदृश्य
39 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य
42 रोजगार समाचार
44 विज्ञान समाचार
45 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य
46 अनुप्रेरक युवा प्रतिभाएं
48 कम्प्यूटर : एक दृष्टि में
50 सारभूत तत्व कोष
54 आगामी रेलवे भर्ती बोर्ड (तकनीकी/गैर-तकनीकी) परीक्षा हेतु विशेष सामान्य ज्ञान संग्रह

लेख

58 बैंकिंग लेख—भुगतान क्षेत्र में डिजिटल बैंकिंग के माध्यम से ग्राहकों के लिए बढ़ते विकल्प
60 कैरियर लेख—रेलवे सुरक्षा बल में महिलाओं के लिए अवसर
61 उद्यमिता प्रोत्साहन—स्टार्ट अप : उद्यमशीलता को बढ़ावा देने का उपाय

हल प्रश्न-पत्र

63 एस.एस.सी. संयुक्त स्नातक स्तरीय परीक्षा, 2015
79 उत्तर प्रदेश चकबन्दी लेखपाल भर्ती परीक्षा, 2015
90 मध्य प्रदेश जेल प्रहरी परीक्षा, 2015
96 आगामी रेलवे भर्ती बोर्ड सम्मिलित (गैर-तकनीकी श्रेणी) परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
103 आगामी रेलवे भर्ती बोर्ड सम्मिलित (गैर-तकनीकी श्रेणी) परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
110 आर.आर.सी. (जबलपुर) ग्रुप 'डी' परीक्षा, 2014
117 मध्य प्रदेश ए.एन.एम. प्रशिक्षण चयन परीक्षा, 2016
124 विविध तथ्य—नवीनतम घटनाक्रम
127 ज्ञान वृद्धि कीजिए
128 क्रीड़ा जगत्

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. —सम्पादक

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

मित्रता के बिना जीवन सारहीन

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

मित्र निकट जिनके नहिं, धूप चाँदनी ताहि ।
मित्र निकट जिनके, नहिं धूप चाँदनी ताहि ।।

(जिनके मित्र पास नहीं होते हैं उन्हें चाँदनी भी धूप की तरह प्रतीत होती है, जिनके मित्र पास होते हैं उन्हें धूप भी चाँदनी की तरह लगती है.)

किसी अनुभवी विज्ञ का कथन है कि मित्रता के फूल बहुत कम खिलते हैं, क्योंकि मित्रता के फूल खिलने के लिए दो ऐसे व्यक्ति चाहिए, जो निष्कपट हों, जिनके बीच ऊँच-नीच की भावना न हो, जो एक-दूसरे के लिए त्याग और समर्पण से परिपूर्ण हों. सच ही कहा है, मित्र मिलना भी बहुत नसीब की बात है. एक सच्चा मित्र, समझदार मित्र, हितैषी व सहनशील मित्र जिसे मिलता है, उसको बहुत बड़ा आत्म-संबल मिलता है. जीवन का शाश्वत नियम है कि 'हम अकेले नहीं जी सकते.' हमें सदैव हर परिस्थिति में, चाहे सुख हो या दुःख, 'साथी' की जरूरत तो होती ही है. मित्रता के बिना जीवन सारहीन प्रतीत होता है, किन्तु इस 'मित्रता' के लिए कुछ चीजें समझ लेनी भी जरूरी हैं, क्योंकि इस शब्द के बहु आयामी अर्थ हैं.'' एक शब्द है, 'मित्र' (Friend); दूसरा है 'मित्रता' (Friendliness).

'मित्रता' वह मनोभाव है जहाँ किसी प्रकार, का 'अस्वीकार भाव' नहीं बचता. जहाँ इंसान के भीतर एक ऐसी समझदारी विकसित हो जाती है कि वह बिना किसी शिकवा-शिकायत के, बिना किसी मान्यता-आग्रह के, बिना किसी चुनाव व लगाव के दूसरों को वैसे ही स्वीकार करता है, जैसे वे 'हैं'. वह दूसरों के व्यवहार में, व्यक्तित्व में अपनी ओर से किसी तरह की काँट-छाँट करने की अपेक्षा नहीं रखता. वह आत्मवत् औरों को देखता व महसूस करता है. जैसे हम में से हर एक यह चाहता है कि लोग हमें वैसे ही स्वीकार करें जैसे हम हैं, हमें हमारी निजता में जीने दें, हमारी स्वतंत्रता का सम्मान करें, हमारे भावों को अभिव्यक्त होने दें; ठीक इसी प्रकार जब हम सबके भाव समझदारी के बिना सम्भव नहीं हैं. एक विकसित सोच-समझ रखने वाला व्यक्ति ही सबके साथ तालमेलपूर्ण ढंग से जी सकता है. अन्यथा तो लोग परस्पर खींचतान ही करते रहते हैं. एक-दूसरे की स्वतन्त्रता को अपनी इच्छाओं से, महत्वाकांक्षाओं से आक्रान्त करते रहते हैं. मित्र भाव की समझ में ये दोष नहीं होते. दोस्ती मैत्री एक सम्बन्ध है, किन्तु मित्रता आत्मवत् अनुभूति का नाम है. जरूरी नहीं कि वह किसी व्यक्ति विशेष के साथ सम्बन्धित हो ही. दोस्ती के सम्बन्ध किसी दिन टूट भी जाते हैं, किन्तु मित्रता का भाव न तो कभी टूटता है, न ही अपनी गरिमा खोता है. दोस्ती कहो या मित्रता– दोनों किन्हीं अर्थों में समान है, तो कई अर्थों में भिन्न-भिन्न भी हैं. 'दोस्ती' में भी ये सारे गुण होते हैं, किन्तु जो दोस्ती कभी रूठती है, कभी गलतफहमियों का शिकार बन जाती है. उस दोस्ती को हम 'मित्रता' नहीं कहते. Friendship and friendliness both are different thing.

●●●